Think IAS

दृष्टि The Vision

Think Drishti

समाजशास्त्र

वैकल्पिक विषय

- वैकल्पिक विषय के चयन का आधार
- वैकल्पिक विषय के रूप में समाजशास्त्र का चयन क्यों?
- सामान्य अध्ययन में समाजशास्त्र की भूमिका
- अध्यापक के बारे में
- उत्तर-लेखन की रणनीति एवं विधि

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar,
Delhi-110009
Contacts: 87501 87501, 011-47532596
Website : www.drishtiias.com

द्वारा- प्रवीण पाण्डेय सर

वैकल्पिक विषय के चयन का आधार

स्नातक या परास्नातक स्तर पर अध्ययन किये गए विषय का चयन करते समय निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है:

- क्या विषय का संबंध सामान्य अध्ययन से है? (हाँ/नहीं)
- क्या उस विषय को कम समय में कम परिश्रम से तैयार किया जा सकता है? (हाँ/नहीं)
- क्या संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में यह हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के बीच चर्चित विषयों में से एक है? (हाँ/नहीं)

यदि हाँ, तो आपको निस्संदेह अपने स्नातक/परास्नातक स्तर पर अध्ययन किये गए विषय का चयन करना चाहिये। यदि नहीं, तो आपको इसकी जगह एक ऐसे विषय का चयन करना चाहिये जिसका संबंध सामान्य अध्ययन से हो।

- *विषय रुचिकर एवं अंकदायी हो एवं उसकी प्रकृति अंतर्विषयक हो क्योंकि यह तत्त्व अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।*
- *विषय में मार्गदर्शन के साथ स्तरीय अध्ययन सामग्री को लेकर भी कोई समस्या न हो।*

वैकल्पिक विषय के रूप में समाजशास्त्र का चयन क्यों?

सिविल सेवा परीक्षा का बदलता परिदृश्य यह उद्घाटित करता है कि संघ लोक सेवा आयोग गत्यात्मक अभ्यर्थियों के चयन को वरीयता देता है। ऐसी स्थित में 'समाजशास्त्र' जैसे विषय की महत्ता अत्यधिक बढ़ जाती है। जहाँ नवीनीकरण व सृजन इसके नियमित कार्यक्रम का हिस्सा होते हैं। वहीं अभ्यर्थियों द्वारा प्रतिवर्ष इस विषय का सर्वाधिक चयन किया जाता रहा है, साथ ही इसके माध्यम से अभ्यर्थी सर्वोच्च रैंक में भी अपना स्थान सुरक्षित करते हैं।

अन्य कारण जो समाजशास्त्र को एक अग्रणी विषय के रूप में स्थापित करते हैं, वे हैं- (i) समाजशास्त्र एकमात्र विषय है जो सामान्य अध्ययन के चारों प्रश्न पत्रों में स्थान रखता है, (ii) निबंध प्रश्नपत्र में 3-4 टॉपिक सामाजिक मुद्दों (समाजशास्त्र) पर आधारित होते हैं। ये सभी मुद्दे इस बात को सिद्ध करने हेतु पर्याप्त हैं कि 'समाजशास्त्र' सिविल सेवा परीक्षा हेतु सर्वाधिक सुरक्षित व अनुशंसित विषय है।

अकादमिक पृष्ठभूमि

एक वैकल्पिक विषय के रूप में समाजशास्त्र की तैयारी हेतु इस विषय में किसी पूर्व ज्ञान या अकादमिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता नहीं है। विविध साक्ष्य यह बात स्पष्ट करते हैं कि अधिकांश अभ्यर्थियों ने समाजशास्त्र में बिना किसी विशिष्ट दक्षता के सर्वोच्च अंक हासिल किये हैं।

समाजशास्त्र का पाठ्यक्रम

अधिकांश विषयों की तुलना में 'समाजशास्त्र' का पाठ्यक्रम अत्यंत छोटा है जिसे 3-4 महीने में 'उचित समझ' एवं 'लेखन दक्षता' के साथ संपन्न किया जा सकता है।

विशिष्टताएँ

- समाजशास्त्र अध्यापन तकनीक 'सिनोप्सिस आधारित तकनीक' है। कक्षा में प्रत्येक टॉपिक का सिनोप्सिस देकर उसका विस्तृत विश्लेषण किया जाता है जिससे विद्यार्थियों में विषय-वस्तु की अवधारणात्मक समझ विकसित होती है अत: उस टॉपिक से संबंधित किसी भी प्रश्न का सटीक उत्तर देने में वे सक्षम हो जाते हैं।
- कक्षा में 'डिक्टेशन' नहीं दिया जाता है जिससे बचे हुए समय का निवेश अवधारणात्मक समझ को और अधिक विकसित करने में किया जा सके।
- साप्ताहिक जाँच प्रक्रिया अनिवार्यत: की जाती है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में लेखन शैली का कुशल विकास करते हुए उन्हें मुख्य परीक्षा के लिये तैयार करना है।
- मुख्य परीक्षा हेतु पृथक 'जाँच शृंखला कार्यक्रम' (Test Series Programme) का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक टेस्ट में पूछे गए प्रश्नों का 'उत्तर-प्रारूप' दिया जाता है तथा 'विस्तृत चर्चा' भी की जाती है। परिणामत: मुख्य परीक्षा के अधिकांश प्रश्न 'जाँच शृंखला कार्यक्रम' के ही प्रश्न या उसके समतुल्य होते हैं। यही कारण है कि पूरे देश स्तर पर हमारे विद्यार्थी ही इस विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करते हैं।
- दोनों प्रश्नपत्रों पर लगभग समान समय दिया जाता है। दोनों तथा मुख्यत: द्वितीय पत्र को अद्यतन बनाने हेतु नवीन केस अध्ययनों एवं रिपोर्टों का प्रयोग किया जाता है। इसी संदर्भ में हमारा लगातार प्रयास रहता है कि संबंधित मुद्दों को भूमंडलीकरण से जोड़कर प्रस्तुत किया जाए।
- राज्य सिविल सेवा परीक्षा (PCS) के पाठ्यक्रमानुसार कुछ अलग कक्षाओं का आयोजन भी किया जाता है।

सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) : पाठ्यक्रम [General Studies (Mains): Syllabus]

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1: भारतीय विरासत और संस्कृति, विश्व का इतिहास एवं भूगोल और समाज		*GS-Paper 1: Indian Heritage and Culture, History and Geography of the World and Society*	
क्र.सं.	**विषय**	**S.No.**	**Topic**
1.	भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला के रूप, साहित्य और वास्तुकला के मुख्य पहलू शामिल होंगे।	1.	Indian culture will cover the salient aspects of Art Forms, Literature and Architecture from ancient to modern times.
2.	18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक का आधुनिक भारतीय इतिहास- महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, व्यक्तित्व, विषय।	2.	Modern Indian history from about the middle of the eighteenth century until the present- significant events, personalities, issues.
3.	स्वतंत्रता संग्राम- इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले महत्त्वपूर्ण व्यक्ति/उनका योगदान।	3.	The Freedom Struggle - its various stages and important contributors/contributions from different parts of the country.
4.	स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन।	4.	Post-independence consolidation and reorganization within the country.
5.	विश्व के इतिहास में 18वीं सदी तथा बाद की घटनाएँ यथा औद्योगिक क्रांति, विश्व युद्ध, राष्ट्रीय सीमाओं का पुन:सीमांकन, उपनिवेशवाद, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राजनीतिक दर्शन जैसे साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद आदि शामिल होंगे, उनके रूप और समाज पर उनका प्रभाव।	5.	History of the world will include events from 18th century such as Industrial revolution, World wars, Redrawal of national boundaries, Colonization, Decolonization, Political philosophies like Communism, Capitalism, Socialism etc.- their forms and effect on the society.
6.	भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ, भारत की विविधता।	6.	Salient features of Indian Society, Diversity of India.
7.	महिलाओं की भूमिका और महिला संगठन, जनसंख्या एवं संबद्ध मुद्दे, गरीबी और विकासात्मक विषय, शहरीकरण, उनकी समस्याएँ और उनके रक्षोपाय।	7.	Role of women and women's organizations, Population and associated issues, Poverty and developmental issues, Urbanization, their problems and their remedies.
8.	भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का प्रभाव।	8.	Effects of globalization on Indian society.
9.	सामाजिक सशक्तीकरण, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता।	9.	Social empowerment, Communalism, Regionalism & Secularism.
10.	विश्व के भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताएँ।	10.	Salient features of world's physical geography.
11.	विश्व भर के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण (दक्षिण एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप को शामिल करते हुए), विश्व (भारत सहित) के विभिन्न भागों में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिये ज़िम्मेदार कारक।	11.	Distribution of key natural resources across the world (including South Asia and the Indian sub-continent); factors responsible for the location of primary, secondary and tertiary sector industries in various parts of the world (including India).
12.	भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखीय हलचल, चक्रवात आदि जैसी महत्त्वपूर्ण भू-भौतिकीय घटनाएँ, भौगोलिक विशेषताएँ और उनके स्थान- अति महत्त्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताओं (जल-स्रोत और हिमावरण सहित) और वनस्पति एवं प्राणिजगत में परिवर्तन और इस प्रकार के परिवर्तनों के प्रभाव।	12.	Important Geophysical phenomena such as Earthquakes, Tsunami, Volcanic activity, Cyclone etc., geographical features and their location- changes in critical geographical features (including Waterbodies and Ice-caps) and in flora and fauna and the effects of such changes.

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-2: शासन व्यवस्था, संविधान, शासन प्रणाली, सामाजिक न्याय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध		*GS-Paper 2 : Governance, Constitution, Polity, Social Justice and International Relations*	
क्र.सं.	**विषय**	**S.No.**	**Topic**
1.	भारतीय संविधान- ऐतिहासिक आधार, विकास, विशेषताएँ, संशोधन, महत्त्वपूर्ण प्रावधान और बुनियादी संरचना।	1.	Indian Constitution- historical underpinnings, evolution, features, amendments, significant provisions and basic structure.
2.	संघ एवं राज्यों के कार्य तथा उत्तरदायित्व, संघीय ढाँचे से संबंधित विषय एवं चुनौतियाँ, स्थानीय स्तर पर शक्तियों और वित्त का हस्तांतरण और उसकी चुनौतियाँ।	2.	Functions and responsibilities of the Union and the States, issues and challenges pertaining to the federal structure, devolution of powers and finances up to local levels and challenges therein.
3.	विभिन्न घटकों के बीच शक्तियों का पृथक्करण, विवाद निवारण तंत्र तथा संस्थान।	3.	Separation of powers between various organs, dispute redressal mechanisms and institutions.
4.	भारतीय संवैधानिक योजना की अन्य देशों के साथ तुलना।	4.	Comparison of the Indian constitutional scheme with that of other countries.
5.	संसद और राज्य विधायिका- संरचना, कार्य, कार्य-संचालन, शक्तियाँ एवं विशेषाधिकार और इनसे उत्पन्न होने वाले विषय।	5.	Parliament and State Legislatures - structure, functioning, conduct of business, powers & privileges and issues arising out of these.
6.	कार्यपालिका और न्यायपालिका की संरचना, संगठन और कार्य- सरकार के मंत्रालय एवं विभाग, प्रभावक समूह और औपचारिक/अनौपचारिक संघ तथा शासन प्रणाली में उनकी भूमिका।	6.	Structure, organization and functioning of the Executive and the Judiciary; Ministries and Departments of the Government; pressure groups and formal/informal associations and their role in the Polity.
7.	जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ।	7.	Salient features of the Representation of People's Act.
8.	विभिन्न संवैधानिक पदों पर नियुक्ति और विभिन्न संवैधानिक निकायों की शक्तियाँ, कार्य और उत्तरदायित्व।	8.	Appointment to various Constitutional posts, powers, functions and responsibilities of various Constitutional Bodies.
9.	सांविधिक, विनियामक और विभिन्न अर्द्ध-न्यायिक निकाय।	9.	Statutory, regulatory and various quasi-judicial bodies.
10.	सरकारी नीतियों और विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिये हस्तक्षेप और उनके अभिकल्पन तथा कार्यान्वयन के कारण उत्पन्न विषय।	10.	Government policies and interventions for development in various sectors and issues arising out of their design and implementation.
11.	विकास प्रक्रिया तथा विकास उद्योग- गैर-सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, विभिन्न समूहों और संघों, दानकर्ताओं, लोकोपकारी संस्थाओं, संस्थागत एवं अन्य पक्षों की भूमिका।	11.	Development processes and the development industry- the role of NGOs, SHGs, various groups and associations, donors, charities, institutional and other stakeholders.
12.	केन्द्र एवं राज्यों द्वारा जनसंख्या के अति संवेदनशील वर्गों के लिये कल्याणकारी योजनाएँ और इन योजनाओं का कार्य-निष्पादन; इन अति संवेदनशील वर्गों की रक्षा एवं बेहतरी के लिये गठित तंत्र, विधि, संस्थान एवं निकाय।	12.	Welfare schemes for vulnerable sections of the population by the Centre and States and the performance of these schemes; mechanisms, laws, institutions and Bodies constituted for the protection and betterment of these vulnerable sections.
13.	स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधनों से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित विषय।	13.	Issues relating to development and management of Social Sector/Services relating to Health, Education, Human Resources.
14.	गरीबी एवं भूख से संबंधित विषय।	14.	Issues relating to poverty and hunger.
15.	शासन व्यवस्था, पारदर्शिता और जवाबदेही के महत्त्वपूर्ण पक्ष, ई-गवर्नेंस- अनुप्रयोग, मॉडल, सफलताएँ, सीमाएँ और संभावनाएँ; नागरिक चार्टर, पारदर्शिता एवं जवाबदेही और संस्थागत तथा अन्य उपाय।	15.	Important aspects of governance, transparency and accountability, e-governance- applications, models, successes, limitations and potential; citizens charters, transparency & accountability and institutional and other measures.
16.	लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका।	16.	Role of civil services in a democracy.
17.	भारत एवं इसके पड़ोसी- संबंध।	17.	India and its neighborhood- relations.
18.	द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से संबंधित और/अथवा भारत के हितों को प्रभावित करने वाले करार।	18.	Bilateral, regional and global groupings and agreements involving India and/or affecting India's interests.
19.	भारत के हितों पर विकसित तथा विकासशील देशों की नीतियों तथा राजनीति का प्रभाव; प्रवासी भारतीय।	19.	Effect of policies and politics of developed and developing countries on India's interests, Indian diaspora.
20.	महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, संस्थाएँ और मंच- उनकी संरचना, अधिदेश।	20.	Important International institutions, agencies and fora- their structure, mandate.

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-3: प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन		*GS-Paper 3: Technology, Economic Development, Bio-diversity, Environment, Security & Disaster Management*	
क्र.सं.	**विषय**	**S.No.**	**Topic**
1.	भारतीय अर्थव्यवस्था तथा योजना, संसाधनों को जुटाने, प्रगति, विकास तथा रोजगार से संबंधित विषय।	1.	Indian Economy and issues relating to planning, mobilization of resources, growth, development and employment.
2.	समावेशी विकास तथा इससे उत्पन्न विषय।	2.	Inclusive growth and issues arising from it.
3.	सरकारी बजट।	3.	Government Budgeting.
4.	मुख्य फसलें- देश के विभिन्न भागों में फसलों का पैटर्न- सिंचाई के विभिन्न प्रकार एवं सिंचाई प्रणाली- कृषि उत्पाद का भंडारण, परिवहन तथा विपणन, संबंधित विषय और बाधाएँ; किसानों की सहायता के लिये ई-प्रौद्योगिकी।	4.	Major crops – cropping patterns in various parts of the country, different types of irrigation and irrigation systems – storage, transport and marketing of agricultural produce and issues and related constraints; e-technology in the aid of farmers.
5.	प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कृषि सहायता तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य से संबंधित विषय; जन वितरण प्रणाली- उद्देश्य, कार्य, सीमाएँ, सुधार; बफर स्टॉक तथा खाद्य सुरक्षा संबंधी विषय; प्रौद्योगिकी मिशन; पशु पालन संबंधी अर्थशास्त्र।	5.	Issues related to direct and indirect farm subsidies and minimum support prices; Public Distribution System-objectives, functioning, limitations, revamping; issues of buffer stocks and food security; Technology missions; economics of animal-rearing.
6.	भारत में खाद्य प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योग- कार्यक्षेत्र एवं महत्त्व, स्थान, ऊपरी और नीचे की अपेक्षाएँ, आपूर्ति शृंखला प्रबंधन।	6.	Food processing and related industries in India- scope and significance, location, upstream and downstream requirements, supply chain management.
7.	भारत में भूमि सुधार।	7.	Land reforms in India.
8.	उदारीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, औद्योगिक नीति में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास पर इनका प्रभाव।	8.	Effects of liberalization on the economy, changes in industrial policy and their effects on industrial growth.
9.	बुनियादी ढाँचा: ऊर्जा, बंदरगाह, सड़क, विमानपत्तन, रेलवे आदि।	9.	Infrastructure: Energy, Ports, Roads, Airports, Railways etc.
10.	निवेश मॉडल।	10.	Investment models.
11.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी- विकास एवं अनुप्रयोग और रोज़मर्रा के जीवन पर इसका प्रभाव।	11.	Science and Technology- developments and their applications and effects in everyday life.
12.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियाँ; देशज रूप से प्रौद्योगिकी का विकास और नई प्रौद्योगिकी का विकास।	12.	Achievements of Indians in Science & Technology; indigenization of technology and developing new technology.
13.	सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कंप्यूटर, रोबोटिक्स, नैनो-टैक्नोलॉजी, बायो-टैक्नोलॉजी और बौद्धिक संपदा अधिकारों से संबंधित विषयों के संबंध में जागरुकता।	13.	Awareness in the fields of IT, Space, Computers, robotics, nano-technology, bio-technology and issues relating to intellectual property rights.
14.	संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरण प्रभाव का आकलन।	14.	Conservation, environmental pollution and degradation, environmental impact assessment.
15.	आपदा और आपदा प्रबंधन।	15.	Disaster and disaster management.
16.	विकास और फैलते उग्रवाद के बीच संबंध।	16.	Linkages between development and spread of extremism.
17.	आंतरिक सुरक्षा के लिये चुनौती उत्पन्न करने वाले शासन विरोधी तत्त्वों की भूमिका।	17.	Role of external state and non-state actors in creating challenges to internal security.
18.	संचार नेटवर्क के माध्यम से आंतरिक सुरक्षा को चुनौती, आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों की भूमिका, साइबर सुरक्षा की बुनियादी बातें, धन-शोधन और इसे रोकना।	18.	Challenges to internal security through communication networks, role of media and social networking sites in internal security challenges, basics of cyber security; money-laundering and its prevention.
19.	सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ एवं उनका प्रबंधन- संगठित अपराध और आतंकवाद के बीच संबंध।	19.	Security challenges and their management in border areas; –linkages of organized crime with terrorism.
20.	विभिन्न सुरक्षा बल और संस्थाएँ तथा उनके अधिदेश।	20.	Various Security forces and agencies and their mandate.

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-4: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि	*GS-Paper 4 :* *Ethics, Integrity and Aptitude*
इस प्रश्न-पत्र में ऐसे प्रश्न शामिल होंगे जो सार्वजनिक जीवन में उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से संबंधित विषयों के प्रति उनकी अभिवृत्ति तथा उनके दृष्टिकोण तथा समाज से आचार-व्यवहार में विभिन्न मुद्दों तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर उनकी मनोवृत्ति का परीक्षण करेंगे। इन आयामों का निर्धारण करने के लिये प्रश्न-पत्र में किसी मामले के अध्ययन (केस स्टडी) का माध्यम भी चुना जा सकता है। मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर किया जाएगा।	*This paper will include questions to test the candidates attitude and approach to issues relating to integrity, probity in public life and his problem solving approach to various issues and conflicts faced by him in dealing with society. Questions may utilise the case study approach to determine these aspects. The following broad areas will be covered.*

क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1.	नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध: मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्त्व, इसके निर्धारक और परिणाम; नीतिशास्त्र के आयाम; निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र, मानवीय मूल्य- महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।	1.	Ethics and Human Interface: Essence, determinants and consequences of Ethics in human actions; dimensions of ethics; ethics in private and public relationships. Human Values – lessons from the lives and teachings of great leaders, reformers and administrators; role of family, society and educational institutions in inculcating values.
2.	अभिवृत्ति: सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्ति; विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिरुचि; सामाजिक प्रभाव और धारण।	2.	Attitude: content, structure, function; its influence and relation with thought and behaviour; moral and political attitudes; social influence and persuasion.
3.	सिविल सेवा के लिये अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य- सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमज़ोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना।	3.	Aptitude and foundational values for Civil Service – integrity, impartiality and non-partisanship, objectivity, dedication to public service, empathy, tolerance and compassion towards the weaker sections.
4.	भावनात्मक समझ: अवधारणाएँ तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।	4.	Emotional intelligence-concepts, and their utilities and application in administration and governance.
5.	भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।	5.	Contributions of moral thinkers and philosophers from India and world.
6.	लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र: स्थिति तथा समस्याएँ; सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ तथा दुविधाएँ; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियम तथा अंतरात्मा; उत्तरदायित्व तथा नैतिक शासन, शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे; कॉरपोरेट शासन व्यवस्था।	6.	Public/Civil service values and Ethics in Public administration: Status and problems; ethical concerns and dilemmas in government and private institutions; laws, rules, regulations and conscience as sources of ethical guidance; accountability and ethical governance; strengthening of ethical and moral values in governance; ethical issues in international relations and funding; corporate governance.
7.	शासन व्यवस्था में ईमानदारी: लोक सेवा की अवधारणा; शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचरण संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ।	7.	Probity in Governance: Concept of public service; Philosophical basis of governance and probity; Information sharing and transparency in government, Right to Information, Codes of Ethics, Codes of Conduct, Citizen's Charters, Work culture, Quality of service delivery, Utilization of public funds, challenges of corruption.
8.	उपर्युक्त विषयों पर मामला संबंधी अध्ययन (केस स्टडीज़)।	8.	Case Studies on above issues.

अध्यापक के बारे में (About the Faculty)

समाजशास्त्र वैकल्पिक विषय के साथ-साथ सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के लिये प्रवीण कुमार पाण्डेय एक प्रतिष्ठित नाम है। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों माध्यमों पर एक समान मज़बूत पकड़ रखने वाले श्री प्रवीण कुमार पाण्डेय विगत 17 वर्षों से सिविल सेवा अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में समाजशास्त्र वैकल्पिक विषय से सैकड़ों अभ्यर्थी देश की प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं में चयनित हो चुके हैं। समाजशास्त्र के अध्यापन के लंबे अनुभव के चलते सामान्य अध्ययन में 'सामाजिक मुद्दे और सामाजिक न्याय' विषय के लिये अभ्यर्थियों की पहली पसंद श्री प्रवीण कुमार पाण्डेय ही हैं। हिंदी माध्यम में समाजशास्त्र की स्तरीय पाठ्य सामग्री के अभाव को देखते हुए उन्होंने कुछ पुस्तकों का लेखन भी किया है।

विगत पाँच वर्षों से लगातार समाजशास्त्र विषय में पूरे देश में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी पाण्डेय सर की कक्षा के ही विद्यार्थी रहे हैं।

उत्तर-लेखन की रणनीति

किसी भी टॉपिक का अध्ययन सीधे तौर पर न करके उसे छोटे-छोटे बिंदुओं या पहलुओं में तोड़कर करें जिनसे या तो वह मिलकर बना है या फिर अध्ययन के दौरान जिनके आने की संभावना बनती है, फिर 'प्रश्न' और उसके 'केंद्र-बिंदु' को देखें। उत्तर-लेखन में प्रश्न के अनुसार ही संबंधित पहलुओं का चयन करें। इस विधि से आपका उत्तर संपूर्ण हो जाता है। इसके अलावा उस टॉपिक पर चाहे जैसा भी प्रश्न पूछा जाए आप आसानी से उसका उत्तर दे सकते हैं क्योंकि आपने सभी संभावित पहलुओं का समावेश कर लिया है। निम्नलिखित उदाहरण की सहायता से इसे आसानी से समझा जा सकता है:

कार्ल-मार्क्स का वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत

1. वर्ग की परिभाषा
2. विभिन्न युगों में वर्ग के रूप : उत्पादन प्रणाली की भूमिका
   - (क) उत्पादन-प्रणाली का अर्थ तथा इससे 'उत्पादक शक्ति' एवं 'उत्पादन संबंध' की उत्पत्ति।
   - (ख) 'अधोसंरचना' (आर्थिक संरचना) एवं 'अधिसंरचना' की अवधारणा
   - (ग) उत्पादन प्रणाली का परिवर्तनीय रूप : एक प्रमुख विशेषता
   - (घ) उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन : एक नए युग का आरम्भ
3. पूंजीवादी व्यवस्था में वर्ग का उदय एवं विकास: पूंजीपति (बुर्जवा) एवं श्रमिक के रूप में
4. श्रमिकों की मजबूरी : श्रम का क्रय-विक्रय
5. श्रमिकों में गलत-चेतना का उदय : धर्म की भूमिका
6. अधिशेष मूल्य एवं अधिकाधिक लाभ
7. स्वचालित मशीनें एवं बेरोज़गारी की समस्या
8. अति-उत्पादन की स्थिति एवं पेट्टी बुर्जवा की समाप्ति
9. श्रमिकों में अलगाव की स्थिति
   - (क) अलगाव का अर्थ
   - (ख) अलगाव का अर्थ-विस्तार :
     - (i) आर्थिक परिप्रेक्ष्य में
     - (ii) समाजिक परिप्रेक्ष्य में
   - (ग) उत्पादन प्रणाली में विशिष्टीकरण का प्राबल्य-अलगाव चरम स्थिति में
   - (घ) अलगाव की धार्मिक व्याख्या
   - (ड.) अलगाववाद की प्रासंगिकता
   - (च) अलगाववाद की आलोचना
10. 'सजातीयता', 'अकिंचनता' (दरिद्रता) तथा 'एकाधिकार' आदि प्रक्रियाओं से 'दो वर्गों का ध्रुवीकरण'
11. 'स्वत: में वर्ग' 'स्वत: के लिये वर्ग' में परिवर्तित : पूर्ण चेतना
    - (क) 'स्वत: में वर्ग' का अर्थ
    - (ख) 'स्वत: में वर्ग' : एक वस्तुनिष्ठ सत्यता
    - (ग) दासत्व युग के 'दास' से लेकर पूंजीवादी युग के 'अलगावित श्रमिक' तक की स्थिति 'स्वत: में वर्ग' की स्थिति → कारण → केवल अपने आप से मतलब रखने वाले, समग्र चेतना की कमी अत: संगठित नहीं।
    - (घ) 'स्वत: के लिये वर्ग' का अर्थ
    - (ड.) 'स्वत: के लिये वर्ग' : 'आत्मनिष्ठ बोध' की स्थिति
    - (च) यह परिवर्तन पेट्टी बुर्जवा के नेतृत्व में संपन्न
    - (छ) परिवर्तन का स्वरूप : चेतनामय, संवेदनशील तथा संगठित वर्ग के रूप में - यही पूर्ण चेतना की स्थिति है।
12. ऐतिहासिक क्रांति
13. साम्यवाद की स्थापना
14. आलोचना :
    - (क) संघर्षवादी चिंतक :
      - (i) मैक्स वेबर
      - (ii) राल्फ डेहरेनडार्फ
    - (ख) प्रकार्यवादी चिंतक :
      - (i) टालकाट पारसन्स
      - (ii) किंगस्ले डेविस एवं मूरे
      - (iii) मेल्विन एम. ट्यूमिन
      - (iv) माइकल यंग
      - (v) इवा रोजेनफिल्ड
    - (ग) अन्य :
      - (i) वेसोलॉस्की
      - (ii) जिलास
      - (iii) कार्ल पॉपर
      - (iv) पाकुल्स्की व वाटर्स

15. **प्रासंगिकता:** अब हम उपर्युक्त टॉपिक से संबंधित प्रश्नों की प्रकृति एवं उनके उत्तर-लेखन पर विचार करेंगे।

प्रश्न 1. कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष की अवधारणा एवं उस पर प्रकार्यवादियों की आलोचना।

उत्तर- प्रारूप → पहलू (1) से लेकर (8) तक,
पहलू (9) (क) से लेकर (घ) तक,
पहलू (10) से लेकर (13) तक, तथा पहलू (14) ख।

प्रश्न 2. वस्तुनिष्ठ सत्यता का आत्मनिष्ठ बोध वर्ग-संघर्ष के ग्रंथन का संदर्भ तैयार करता है।

उत्तर- प्रारूप → पहलू 11 (क) से लेकर (ड.) तक,
पहलू (1) से लेकर (8) तक,
पहलू (9) (क) से लेकर (घ) तक,
पहलू (10) एवं (11) (च) से लेकर (छ) तक, तथा पहलू (12) एवं (13)।

प्रश्न 3. 'उत्पादन प्रणाली' पर संक्षिप्त टिप्पणी।

उत्तर- प्रारूप → पहलू (2) (क) से लेकर (घ) तक।

प्रश्न 4. 'स्वत: में वर्ग' एवं 'स्वत: के लिये वर्ग' पर संक्षिप्त टिप्पणी।

उत्तर- प्रारूप → पहलू (11) (क) से लेकर (छ) तक।

प्रश्न 5. 'अलगाववाद' पर संक्षिप्त टिप्पणी।

उत्तर- प्रारूप → पहलू (9) (क) से लेकर (ड.) तक।

समाजशास्त्र का द्वितीय प्रश्न-पत्र मुख्यत: प्रायोगिक है जिसके तथ्यों को सिद्ध करने के लिये हमें सुदृढ़ तर्कों की आवश्यकता होती है और ये सुदृढ़ तर्क हमें 'केस अध्ययनों' के रूप में मिलते हैं। जिनका उचित प्रयोग एवं विश्लेषण हमारे उत्तर में शक्ति का संचार कर देते हैं। केस अध्ययनों की मात्रा अधिक होने एवं इनकी नितांत अनुपस्थिति दोनों से ही उत्तर की प्रकृति बिगड़ सकती है। अत: उत्तर को पूर्ण एवं व्यवस्थित बनाने के लिये केस अध्ययन एवं विश्लेषण दोनों का उचित सामंजस्य आवश्यक है। इसी संदर्भ में एक और बात यह है कि पुराने केस अध्ययनों के साथ नवीन केस अध्ययन भी अपने उत्तर में डालने की कोशिश करें। इसके लिए भूमंडलीकरण, उदारीकरण, पंचायती राज, विभिन्न विकास कार्यक्रमों एवं विविध सामाजिक मुद्दों से संबंधित केस अध्ययनों का सहारा लें।

उत्तर-लेखन की विधि

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में उत्तर का प्रस्तुतीकरण सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। प्रत्येक प्रश्न का एक केंद्र-बिंदु होता है। अत: उत्तर ऐसा होना चाहिये जो प्रश्न के केंद्र-बिंदु के ईर्द-गिर्द ही हो। कहने का अर्थ है कि उत्तर हमेशा फोकस्ड होना चाहिये।

इसे स्पष्ट करने के लिये नीचे दोनों प्रश्न-पत्रों से एक-एक संक्षिप्त टिप्पणी एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत किये जा रहे हैं :

प्रश्न 1. ऐतिहासिक भौतिकवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। **(लगभग 150 शब्द)**

उत्तर: ऐतिहासिक भौतिकवाद : मानव समाज तथा उसके इतिहास पर द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के नियमों को लागू करके सामाजिक संबंधों की उत्पति व विकास के नियमों को समझने की प्रक्रिया को ऐतिहासिक भौतिकवाद कहते हैं।

परिवर्तन हेतु मुख्य निर्धारक आर्थिक तत्त्व हैं क्योंकि मनुष्य की आवश्यकता रोटी, कपड़ा व मकान है, जिसकी निश्चित पूर्ति हेतु वह कार्य करता है। किसी भी कार्यप्रणाली की निश्चित दशा उसके लिये उत्पादन प्रणाली होती है, जिसके भौतिक व सामाजिक दो पक्ष होते हैं। जिनसे क्रमश: उत्पादक शक्ति एवं उत्पादन संबंध उत्पन्न होते हैं। उत्पादक शक्ति में मानव श्रम व उपकरण आदि आते हैं। तो वहीं उत्पादन संबंध सामाजिक उत्पादन का द्योतक है।

उत्पादक शक्ति एवं उत्पादन संबंधों के योग से अधोसंरचना निर्मित होती है जो सामाजिक व्यवस्था की नींव है। जिस पर व्यवस्था के अन्य संबंध अर्थात् अधिरचना टिकी होती है।

अधोसंरचना में परिवर्तन अधिसंरचना को परिवर्तित कर देता है। यह परिवर्तन द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के नियमों पर आधारित है। जिसके अंतर्गत पहले मात्रात्मक और फिर गुणात्मक परिवर्तन होते हैं। इससे एक नए युग और इस प्रकार एक नई उत्पादन प्रणाली उत्पन्न होती है। उदाहरणार्थ - आदिम साम्यवादी युग से दासत्व युग, दासत्व युग से सामंतवादी युग, और सामंतवादी युग से पूंजीवादी युग।

परिवर्तन पहले भौतिक वस्तुओं में फिर विचारों या चेतना में होता है। मार्क्स के अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था की चरम स्थिति में चेतना में वास्तविक परिवर्तन होता है। जब 'स्वत: में वर्ग' 'स्वत: के लिये वर्ग' में परिवर्तित हो जाता है। यही क्रांति हेतु उत्तरदायी है। जिससे साम्यवादी युग अर्थात् एक वर्गविहीन, राज्यविहीन, शोषण रहित व्यवस्था स्थापित होती है।

प्रश्न 2. आधुनिक समाजों में परिवार की परिवर्तनशील संरचना के लिये उत्तरदायी कारकों पर चर्चा कीजिये। **(लगभग 300 शब्द)**

उत्तर: परिवार की परिवर्तनशील संरचना के लिये उत्तरदायी कारक :

(i) **आर्थिक:** औद्योगीकरण एवं नगरीकरण से गतिशीलता बढ़ी जिसके फलस्वरूप पारिवारिक संरचना में परिवर्तन होने लगा। अत: संयुक्त परिवार मूल परिवार में बदलने लगे।

टालकाट पारसंस के अनुसार: एक आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था जिसमें विशेषीकृत श्रम विभाजन है, श्रम शक्ति से एक आवश्यक मात्रा में भौगोलिक गतिशीलता की मांग करती है। अत: विशेष दक्षता वाले व्यक्तियों को उन स्थानों पर जाना पड़ा जहाँ उनकी मांग थी। इस प्रकार भौगोलिक गतिशीलता की आवश्यकता की पूर्ति के लिये विलगित मूल परिवार ही सबसे उचित है। जिसका अर्थ है कि इसके सदस्य अब व्यापक नातेदारी व्यवस्था में बंधे नहीं हैं जैसा की पूर्व औद्योगिक परिवारों में देखा गया। यह काफी छोटी संरचना है।

विलियम जे० गूडी: पारसंस की तरह गूडी भी यह तर्क देते हैं कि औद्योगीकरण विस्तारित परिवार तथा विस्तृत नातेदारी समूहों को समाप्त करने की ओर अग्रसर है। इसके लिये गूडी ने निम्न व्याख्या प्रस्तुत की :

1. अत्यधिक भौगोलिक गतिशीलता (औद्योगिक समाज में) के कारण नातेदारों के बीच घनिष्ठता और संपर्क की मात्रा में गिरावट आती है।
2. सापेक्षिक सामाजिक गतिशीलता भी नातेदारी बंधनों को कम करने की ओर अग्रसर होती है।

(ii) आधुनिकीकरण: इसके निम्न मद हैं-

(a) शिक्षा: औद्योगीकरण की प्रारंभिक अवस्था में लोग मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित थे - उच्च और निम्न। लेकिन आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर सभी के पास उपलब्ध था जिसके द्वारा निम्न श्रमिक वर्ग के बच्चे सामाजिक उन्नति को प्राप्त कर सकते थे। 'रेमंड बोडन' (स्थितीय सिद्धांत) बताते हैं कि एक श्रमिक अपने पिता की तुलना में उच्च गतिशीलता को प्राप्त करता है क्योंकि वह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को चयनित करता है और इस प्रकार गतिशीलता प्राप्त करके वह अपने पारिवारिक संरचना को भी प्रभावित कर लेता है, जिसे हम मूल परिवार के रूप में देख सकते हैं।

(b) वैचारिक परिवर्तन: इससे जागरूकता बढ़ी और स्त्रियों की स्थिति में सुधार आया। एन. ओकले ने ब्रिटिश समाज का एक चित्र प्रस्तुत किया कि किस प्रकार औद्योगीकरण (आधुनिकीकरण) ने घरेलू औरतों को आधुनिक भूमिका दिलाई। अब गृहणियों की भूमिका एक प्रभुत्वशील प्रौढ़ महिला भूमिका के रूप में है।

(c) न्यायिक व्यवस्था में परिवर्तन: विभिन्न प्रकार के अधिनियम पारित किये गए तथा इससे भी महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ। अब वे महिलाएँ परिवार में मांग करने वाली हो गई हैं। जिसकी पूर्ति मूल परिवार में ही हो सकती है।

(d) राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन: इससे सभी को समानता एवं स्वतंत्रता मिली। गूडी का मानना है कि स्वतंत्रता के इस अधिकार के कारण मूल परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई और ऐसा गैर-पश्चिमी समाजों में भी देखा गया। गूडी की इस बात का समर्थन **केन्नेथ लिटिल** ने की। जिन्होंने प० अफ्रीका के उन परिवारों का अध्ययन किया जो ग्रामीण नातेदारी पर आधारित समाजों से नगरीय औद्योगिक स्थानों में प्रवजन किये।

(e) जनसंचार माध्यमों में परिवर्तन: इसने लोगों के जागरूकता एवं गतिशीलता के स्तर को बढ़ाया जिसने पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया।

(iii) पंथ निरपेक्षता:

एस.सी. दूबे का विश्लेषण:

पश्चिमी समाज में (विज्ञान एवं तकनीकी के माध्यम से) शिशु मृत्यु/मातृत्व मृत्युदर में कमी → परिवार का आकार कम हुआ।
भारतीय समाज → हिंदूधर्म → पुत्र प्राप्ति की कामना + उच्च तकनीकों का प्रयोग

- अत: हिंदू धर्म को अपनाए जाने के बावजूद परिवार का आकार कम हुआ।

इस प्रकार इन विभिन्न कारको की मदद से विश्व स्तर पर पारिवारिक संरचना में बदलाव जारी है।

प्रश्न 3. ग्रामीण भारत में शक्ति संरचना की व्याख्या कीजिये।
(लगभग 250 शब्द)

उत्तर:

1. **स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले ग्रामीण शक्ति संरचना:** उस समय भारत में ज़मींदारी प्रथा थी तथा ज़मींदार उच्च जातियों से जुड़े हुए थे तथा ग्रामीण शक्ति भी उन्हीं के हाथ में थी। पंच परमेश्वर में या तो उनके अपने सदस्य थे या फिर उनके प्रभाव में थे। इस प्रकार किसी भी विवाद पर लिया गया निर्णय हमेशा उनके हक में होता था।
2. **स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की स्थिति:**

(a) प्रथम चरण - नेतृत्व की भूमिका: यद्यपि ज़मींदारों और सामंतों के विशेषाधिकारों और आर्थिक अधिकारों के उन्मूलन से समानता पर आधारित वर्ग संरचना का प्रादुर्भाव भारत में नहीं हुआ तथापि इस परिवर्तन ने किसानों पर एक बड़ा सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाला, जिसके कारण परंपरागत शक्ति समूहों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिये ये निम्न स्तरीय लोग अभिप्रेरित हुए। जिसमें सामाजिक प्रस्थिति तथा शक्तियाँ निहित थीं। ग्रामीण नेतृत्व अब अधिक से अधिक समझौता करने वाला तथा नवीन विचारों वाला होता जा रहा था और अब जबकि पुराने ग्रामीण अभिजनों की समाप्ति हो रही थी और इस प्रकार जो नेतृत्व उभर रहा था, उसे विरोधी हित समूहों तथा नए उपसमूहों के साथ सत्ता में बने रहने के लिये समझौता करना पड़ रहा था। ओरेन्सटाइन बम्बई के एक गाँव के अध्ययन में पाते हैं कि औपचारिक (कठोर) नेताओं की तुलना में अनौपचारिक (लचीले) नेता काफी प्रभावी हैं।

(b) द्वितीय चरण - गुटबंदी : एलन बील्स ने हैदराबाद के गाँव नामहल्ली के अध्ययन में ग्रामीण नेतृत्व को समूहों में विभाजित पाया तथा यह पाया कि ग्रामीण लोग ऐसे नेताओं पर टिके रहना चाहते हैं, जिनमें सफलतापूर्वक क्रिया करने की क्षमता हो। **विलियम मैक्कार्मैक** भी बंगलोर के मॉरसल्ली गाँव के अध्ययन में इसी प्रकार का नेतृत्व पाते हैं (समूहों में विभाजित)।

(c) **तृतीय चरण - उच्च जातियों द्वारा शक्ति पुनर्जीवीकरण का प्रयास:** योजना आयोग के एक सर्वेक्षण के अनुसार परंपरागत रूप से शक्तिशाली समूहों में अपनी शक्ति संरचना को बनाए रखने के उद्देश्य को लेकर एक स्पष्ट रुझान दिखाई दे रहा है। यह शक्तिशाली समूह अपनी भूमिकाओं को पुन: परिभाषित करने तथा पुन: अनुकूलता प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं।

आंद्रे बेते ने तंजौर ज़िले के श्रीपुरम् गाँव का अध्ययन किया और पाया कि लोगों के द्वारा अपनी भूस्वामित्व को अधिक न खोने के बावजूद शक्ति संरचना में परिवर्तन हुआ। इसका अर्थ यह हुआ कि उच्च जाति तथा धनी स्थिति होने के बावजूद शक्ति अब ऐसे लोगों के हाथों में नहीं रही। बल्कि अब ऐसे भी लोगों के हाथों में जाने लग गई है जो न तो उच्च जाति के हैं और न धनी हैं। इस प्रकार शक्ति का यह आधार जाति और वर्ग दोनों से परे हो गया है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य अब संख्यात्मक शक्ति हो गई है। ब्राह्मणों द्वारा शक्ति को पुन: प्राप्त करने का प्रयास यहाँ विफल हो गया।

(d) **चतुर्थ चरण - पंचायती राज व्यवस्था का संस्थाकरण:** आधुनिकीकरण प्रक्रिया की नीति के तहत जब स्थानीय सत्ता का संस्थाकरण कर दिया गया अर्थात् पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई तो यह नेतृत्व को सही दिशा देने में एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ। जिसकी शुरुआत अनुसूचित जाति व जनजाति के उम्मीदवारों के लिये आरक्षण तथा उसी प्रकार महिलाओं के लिए भी 1/3 आरक्षण के रूप में की गई।

यद्यपि शुरू में इसे कोई खास सफलता नहीं मिल पाई लेकिन धीरे-धीरे सत्ताधारी लोगों को अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान होने लगा, जिसका नतीजा यह हुआ कि उनके द्वारा स्वयं निर्णय अब लिये जा रहे हैं जो लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के वास्तविक रूप का परिचायक है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमें कुछ राज्यों में किये जा रहे पंचायती राज में नवीन प्रयोगों के रूप में देखने को मिलता है, जैसे- राजस्थान में पंचायत स्तर पर मिनी सचिवालय की स्थापना तथा मध्य प्रदेश में पंचायतों का ग्राम स्वराज के रूप में कार्य करना आदि।

निष्कर्षत: भारत में अधिकांश गाँव में जाति और वर्ग के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण इस अर्थ में आया है कि ग्रामीण नेतृत्व का संबंध जाति और वर्ग दोनों से टूटने लगा क्योंकि लोगों में शिक्षा के प्रति अभिप्रेरणा में वृद्धि हुई है। तथा इसके अलावा प्रस्थिति गतिशीलता के प्रति भी लोग अभिप्रेरित हुए हैं। नेतृत्व अब व्यक्ति की कुशलता पर निर्भर होने लगा है, जिसे पाने हेतु प्रत्येक कुशल व्यक्ति में एक प्रतिस्पर्द्धा की भावना उत्पन्न हुई है, जिसका परिणामे निस्संदेह ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन है।

समाजशास्त्र : पाठ्यक्रम [Sociology : Syllabus]

प्रश्नपत्र-I: समाजशास्त्र के मूलभूत सिद्धांत		Paper I: Fundamentals of Sociology	
क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1.	**समाजशास्त्र-विद्याशाखा :** (क) यूरोप में आधुनिकता एवं सामाजिक परिवर्तन तथा समाजशास्त्र का आविर्भाव। (ख) समाजशास्त्र का विषय-क्षेत्र एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों से इसकी तुलना। (ग) समाजशास्त्र एवं सामान्य बोध।	1.	**Sociology – The Discipline :** (a) Modernity and social changes in Europe and emergence of Sociology. (b) Scope of the subject and comparison with other social sciences. (c) Sociology and common sense.
2.	**समाजशास्त्र विज्ञान के रूप में :** (क) विज्ञान, वैज्ञानिक पद्धति एवं समीक्षा। (ख) अनुसंधान क्रियाविधि के प्रमुख सैद्धांतिक तत्त्व। (ग) प्रत्यक्षवाद एवं इसकी समीक्षा। (घ) तथ्य, मूल्य एवं उद्देश्यपरकता। (ड.) गैर-प्रत्यक्षवादी क्रियाविधियाँ।	2.	**Sociology as Science :** (a) Science, scientific method and critique. (b) Major theoretical strands of research methodology. (c) Positivism and its critique. (d) Fact, value and objectivity. (e) Non-positivist methodologies.
3.	**अनुसंधान पद्धतियाँ एवं विश्लेषण :** (क) गुणात्मक एवं मात्रात्मक पद्धतियाँ। (ख) दत्त संग्रहण की तकनीक। (ग) परिवर्त, प्रतिचयन, प्राक्कल्पना, विश्वसनीयता एवं वैधता।	3.	**Research Methods and Analysis :** (a) Qualitative and quantitative methods. (b) Techniques of data collection. (c) Variables, sampling, hypothesis, reliability and validity.

4.	**समाजशास्त्री चिंतक :** (क) कार्ल मार्क्स – ऐतिहासिक भौतिकवाद, उत्पादन विधि, विसंबंधन, वर्ग संघर्ष। (ख) इमाईल दुर्खीम – श्रम विभाजन, सामाजिक तथ्य, आत्महत्या, धर्म एवं समाज। (ग) मैक्स वेबर – सामाजिक क्रिया, आदर्श प्ररूप, सत्ता, नौकरशाही, प्रोटेस्टेंट नीतिशास्त्र और पूंजीवाद की भावना। (घ) तालकॉट पार्सन्स – सामाजिक व्यवस्था, प्रतिरूप परिवर्त। (ङ) रॉबर्ट के. मर्टन – अव्यक्त तथा अभिव्यक्त प्रकार्य, अनुरूपता एवं विसामान्यता, संदर्भ समूह। (च) मीड – आत्म एवं तादात्म्य।	4.	**Sociological Thinkers :** (a) Karl Marx – Historical materialism, mode of production, alienation, class struggle. (b) Emile Durkhteim – Division of labour, social fact, suicide, religion and society. (c) Max Weber – Social action, ideal types, authority, bureaucracy, protestant ethic and the spirit of capitalism. (d) Talcolt Parsons – Social system, pattern variables. (e) Robert K. Merton – Latent and manifest functions, conformity and deviance, reference groups. (f) Mead - Self and identity.
5.	**स्तरीकरण एवं गतिशीलता :** (क) संकल्पनाएँ – समानता, असमानता, अधिक्रम, अपवर्जन, गरीबी एवं वंचन। (ख) सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धांत – संरचनात्मक प्रकार्यवादी सिद्धांत, मार्क्सवादी सिद्धांत, वेबर का सिद्धांत। (ग) आयाम – वर्ग, स्थिति समूहों, लिंग, नृजातीयता एवं प्रजाति का सामाजिक स्तरीकरण। (घ) सामाजिक गतिशीलता – खुली एवं बंद व्यवस्थाएँ, गतिशीलता के प्रकार, गतिशीलता के स्रोत एवं कारण।	5.	**Stratification and Mobility :** (a) Concepts – equality, inequality, hierarchy, exclusion, poverty and deprivation. (b) Theories of social stratification – Structural functionalist theory, Marxist theory, Weberian theory. (c) Dimensions – Social stratification of class, status groups, gender, ethnicity and race. (d) Social mobility – open and closed systems, types of mobility, sources and causes of mobility.
6.	**कार्य एवं आर्थिक जीवन :** (क) विभिन्न प्रकार के समाजों में कार्य का सामाजिक संगठन – दास समाज, सामंती समाज, औद्योगिक/पूंजीवादी समाज। (ख) कार्य का औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन। (ग) श्रम एवं समाज।	6.	**Works and Economic Life :** (a) Social organization of work in different types of society – slave society, feudal society, industrial/ capitalist society. (b) Formal and informal organization of work. (c) Labour and society.
7.	**राजनीति एवं समाज :** (क) सत्ता के समाजशास्त्रीय सिद्धांत। (ख) सत्ता प्रव्रजन, नौकरशाही, दबाव समूह और राजनीतिक दल। (ग) राष्ट्र, राज्य, नागरिकता, लोकतंत्र, सिविल सोसायटी, विचारधारा। (घ) विरोध, आंदोलन, सामाजिक आंदोलन, सामूहिक क्रिया, क्रांति।	7.	**Politics and Society :** (a) Sociological theories of power. (b) Power elite, bureaucracy, pressure groups and political parties. (c) Nation, state, citizenship, democracy, civil society, ideology. (d) Protest, agitation, social movements, collective action, revolution.
8.	**धर्म एवं समाज :** (क) धर्म के समाजशास्त्रीय सिद्धांत। (ख) धार्मिक कर्म के प्रकार : जीववाद, एकतत्त्ववाद, बहुतत्त्ववाद, पंथ, उपासना पद्धतियाँ। (ग) आधुनिक समाज में धर्म : धर्म एवं विज्ञान, धर्मनिरपेक्षीकरण, धार्मिक पुनःप्रवर्तनवाद, मूलतत्त्ववाद।	8.	**Religion and Society :** (a) Sociological theories of religion. (b) Types of religious practices: animism, monism, pluralism, sects, cults. (c) Religion in modern society: religion and science, secularization, religious revivalism, fundamentalism.
9.	**नातेदारी की व्यवस्थाएँ :** (क) परिवार, गृहस्थी, विवाह। (ख) परिवार के प्रकार एवं रूप। (ग) वंश एवं वंशानुक्रम। (घ) पितृतंत्र एवं श्रम का लिंगाधारित विभाजन। (ङ) समसामयिक प्रवृत्तियाँ।	9.	**Systems of Kinship :** (a) Family, household, marriage. (b) Types and forms of family. (c) Lineage and descent. (d) Patriarchy and sexual division of labour. (e) Contemporary trends.
10.	**आधुनिक समाज में सामाजिक परिवर्तन :** (क) सामाजिक परिवर्तन के समाजशास्त्रीय सिद्धांत। (ख) विकास एवं पराश्रितता। (ग) सामाजिक परिवर्तन के कारक। (घ) शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन। (ङ) विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक परिवर्तन।	10.	**Social Change in Modern Society :** (a) Sociological theories of social change. (b) Development and dependency. (c) Agents of social change. (d) Education and social change. (e) Science, technology and social change.

प्रश्नपत्र-II: भारतीय समाज : संरचना एवं परिवर्तन		Paper II : Indian Society : Structure and Change	
क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1.	**भारतीय समाज का परिचय :** **(i) भारतीय समाज के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य** (क) भारतीय विद्या (जी.एस. घुर्ये) (ख) संरचनात्मक प्रकार्यवाद (एम.एन.श्रीनिवास) (ग) मार्क्सवादी समाजशास्त्र (ए.आर.देसाई) **(ii) भारतीय समाज पर औपनिवेशिक शासन का प्रभाव** (क) भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि। (ख) भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण। (ग) औपनिवेशिक काल के दौरान विरोध एवं आंदोलन। (घ) सामाजिक सुधार।	1.	**Introducing Indian Society :** **(i) Perspectives on the Study of Indian Society** (a) Indology (G.S. Ghurye). (b) Structural functionalism (M. N. Srinivas). (c) Marxist sociology (A. R. Desai). **(ii) Impact of colonial rule on Indian society** (a) Social background of Indian nationalism. (b) Modernization of Indian tradition. (c) Protests and movements during the colonial period. (d) Social reforms.
2.	**सामाजिक संरचना :** **(i) ग्रामीण एवं कृषिक सामाजिक संरचना** (क) भारतीय ग्राम का विचार एवं ग्राम अध्ययन (ख) कृषिक सामाजिक संरचना – पट्टेदारी प्रणाली का विकास, भूमि सुधार। **(ii) जाति व्यवस्था** (क) जाति व्यवस्था के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य (जी.एस. घुर्ये, एम.एन. श्रीनिवास, लुई ड्यूमाँ, आंद्रे बेते) (ख) जाति व्यवस्था के अभिलक्षण। (ग) अस्पृश्यता-रूप एवं परिप्रेक्ष्य।	2.	**Social Structure :** **(i) Rural and Agrarian Social Structure** (a) The idea of Indian village and village studies. (b) Agrarian social structure – evolution of land tenure system, land reforms. **(ii) Caste System** (a) Perspectives on the study of caste systems : G. S. Ghurye, M. N. Srinivas, Louis Dumont, Andre Beteille. (b) Features of caste system. (c) Untouchability-forms and perspectives.
	(iii) भारत में जनजातीय समुदाय (क) परिभाषीय समस्याएँ। (ख) भौगोलिक विस्तार। (ग) औपनिवेशिक नीतियाँ एवं जनजातियाँ। (घ) एकीकरण एवं स्वायत्तता के मुद्दे। **(iv) भारत में सामाजिक वर्ग** (क) कृषिक वर्ग संरचना। (ख) औद्योगिक वर्ग संरचना। (ग) भारत में मध्यम वर्ग। **(v) भारत में नातेदारी की व्यवस्थाएँ** (क) भारत में वंश एवं वंशानुक्रम। (ख) नातेदारी व्यवस्थाओं के प्रकार। (ग) भारत में परिवार एवं विवाह। (घ) परिवार के घरेलू आयाम। (ङ) पितृतंत्र, हकदारी एवं श्रम का लिंगाधारित विभाजन। **(vi) धर्म एवं समाज** (क) भारत में धार्मिक समुदाय। (ख) धार्मिक अल्पसंख्यकों की समस्याएँ।		**(iii) Tribal Communities in India** (a) Definitional problems. (b) Geographical spread. (c) Colonial policies and tribes. (d) Issues of integration and autonomy. **(iv) Social Classes in India** (a) Agrarian class structure. (b) Industrial class structure. (c) Middle classes in India. **(v) Systems of Kinship in India** (a) Lineage and descent in India. (b) Types of kinship systems. (c) Family and marriage in India. (d) Household dimensions of the family. (e) Patriarchy, entitlements and sexual division of labour. **(vi) Religion and Society** (a) Religious communities in India. (b) Problems of religious minorities.
3.	**भारत में सामाजिक परिवर्तन :** **(i) भारत में सामाजिक परिवर्तन के विज़न** (क) विकास आयोजना एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था का विचार। (ख) संविधान, विधि एवं सामाजिक परिवर्तन। (ग) शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन।	3.	**Social Changes in India :** **(i) Visions of Social Change in India** (a) Idea of development planning and mixed economy. (b) Constitution, law and social change. (c) Education and social change.

(ii) भारत में ग्रामीण एवं कृषिक रूपांतरण

(क) ग्रामीण विकास कार्यक्रम, समुदाय विकास कार्यक्रम, सहकारी संस्थाएँ, गरीबी उन्मूलन योजनाएँ।

(ख) हरित क्रांति एवं सामाजिक परिवर्तन।

(ग) भारतीय कृषि में उत्पादन की बदलती विधियाँ।

(घ) ग्रामीण मज़दूर, बंधुआ एवं प्रवासन की समस्याएँ।

(iii) भारत में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण

(क) भारत में आधुनिक उद्योग का विकास।

(ख) भारत में नगरीय बस्तियों की वृद्धि।

(ग) श्रमिक वर्ग : संरचना, वृद्धि, वर्ग संघटन।

(घ) अनौपचारिक क्षेत्रक, बाल श्रम।

(ङ) नगरीय क्षेत्रों में मलिन बस्ती एवं वंचन।

(iv) राजनीति एवं समाज

(क) राष्ट्र, लोकतंत्र एवं नागरिकता।

(ख) राजनीतिक दल, दबाव समूह, सोशल एवं पोलिटिकल एलिट।

(ग) क्षेत्रीयतावाद एवं सत्ता का विकेंद्रीकरण।

(घ) धर्मनिरपेक्षीकरण।

(v) आधुनिक भारत में सामाजिक आंदोलन

(क) कृषक एवं किसान आंदोलन।

(ख) महिला आंदोलन।

(ग) पिछड़ा वर्ग एवं दलित वर्ग आंदोलन।

(घ) पर्यावरणीय आंदोलन।

(ङ) नृजातीयता एवं अभिज्ञान आंदोलन।

(vi) जनसंख्या गतिकी

(क) जनसंख्या आकार, वृद्धि, संघटन एवं वितरण।

(ख) जनसंख्या वृद्धि के घटक: जन्म, मृत्यु, प्रवासन।

(ग) जनसंख्या नीति एवं परिवार नियोजन।

(घ) उभरते हुए मुद्दे : काल प्रभावन, लिंगानुपात, बाल एवं शिशु मृत्युदर, जनन स्वास्थ्य।

(vii) सामाजिक रूपांतरण की चुनौतियाँ

(क) विकास का संकट : विस्थापन, पर्यावरणीय समस्याएँ एवं संपोषणीयता।

(ख) गरीबी, वंचन एवं असमानताएँ।

(ग) स्त्रियों के प्रति हिंसा।

(घ) जाति द्वंद्व।

(ङ) नृजातीय द्वंद्व, सांप्रदायिकता, धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद।

(च) निरक्षरता तथा शिक्षा में असमानताएँ।

(ii) Rural and Agrarian Transformation in India

(a) Programmes of rural development, Community Development Programme, cooperatives, poverty alleviation schemes.

(b) Green revolution and social change.

(c) Changing modes of production in Indian agriculture.

(d) Problems of rural labour, bondage, migration.

(iii) Industrialization and Urbanization in India

(a) Evolution of modern industry in India.

(b) Growth of urban settlements in India.

(c) Working class: structure, growth, class mobilization.

(d) Informal sector, child labour.

(e) Slums and deprivation in urban areas.

(iv) Politics and Society

(a) Nation, democracy and citizenship.

(b) Political parties, pressure groups, social and political elite.

(c) Regionalism and decentralization of power.

(d) Secularization.

(v) Social Movements in Modern India

(a) Peasants and farmers movements.

(b) Women's movement.

(c) Backward classes & Dalit movements.

(d) Environmental movements.

(e) Ethnicity and Identity movements.

(vi) Population Dynamics

(a) Population size, growth, composition and distribution.

(b) Components of population growth: birth, death, migration.

(c) Population Policy and family planning.

(d) Emerging issues: ageing, sex ratios, child and infant mortality, reproductive health.

(vii) Challenges of Social Transformation

(a) Crisis of development: displacement, environmental problems and sustainability.

(b) Poverty, deprivation and inequalities.

(c) Violence against women.

(d) Caste conflicts.

(e) Ethnic conflicts, communalism, religious revivalism.

(f) Illiteracy and disparities in education.

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

641, Ist Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9 Ph.: 87501 87501, 011-47532596

E-mail: online@groupdrishti.com, *Website: www.drishtiias.com

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम
(Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन
(प्रारंभिक परीक्षा)
(19 बुकलेट्स) ₹10,000/-

सामान्य अध्ययन
(मुख्य परीक्षा)
(26 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रारंभिक परीक्षा)
(27 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(31 बुकलेट्स) ₹15,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(39 बुकलेट्स) ₹17,500/-

हिन्दी साहित्य
(वैकल्पिक विषय)
₹7,000/-

इतिहास (वैकल्पिक विषय)
₹7,000/-

दर्शन शास्त्र (वैकल्पिक विषय)
₹5,000/-

For UPSC CSE (in English Medium)

Self Learning Modules

Students may opt for following modules

- Prelims (18 GS + 3 CSAT Booklets) ₹10000/-
- Mains (18 GS Booklets) ₹11000/-
- Prelims + Mains (36 GS + 3 CSAT Booklets) ₹15000/-

Offer

- *Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs Today magazine with every module*
- *Free Test Series worth ₹ 6,000 for UPSC CSE Prelims 2019 with Prelims+Mains module*
- *Flat 50% discount on Test Series worth ₹ 6,000 for UPSC CSE Prelims 2019 with Prelims/Mains modules*

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(33 + 10 Booklets) (₹15,500/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(33 Booklets) (₹14,000/-)

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 Booklets) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 Booklets) (₹10,000/-)

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 Booklets) (₹11,000/-)

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 Booklets) (₹10,000/-)

For UPPCS Mains (in English Medium)

Self Learning Module

19 GS + 1 Essay + 1 Compulsory Hindi Booklets
₹7000/-

Offer

Free 6 months subscription of Drishti Current Affairs

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485520, 87501-87501, 011-47532596

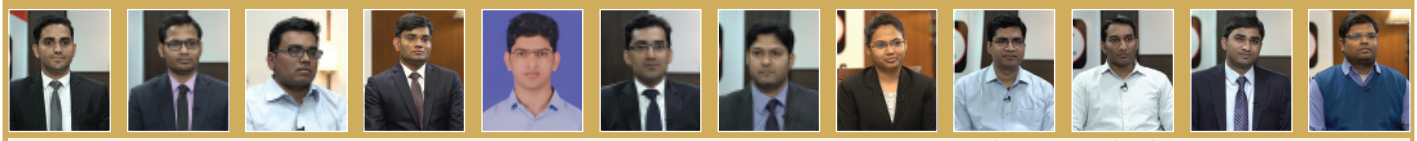

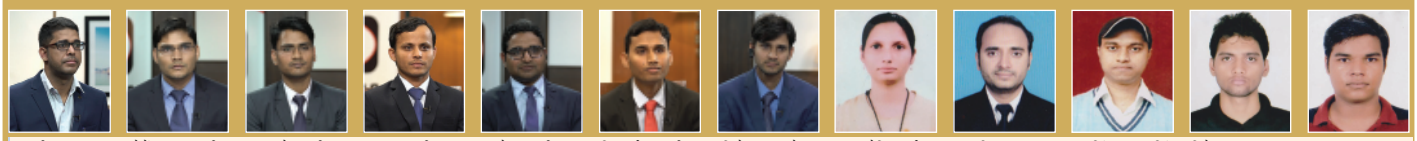

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम
दृष्टि The Vision
किरण कौशल 3rd Rank
अजय मिश्रा 5th Rank
लोकेश कुमार सिंह 10th Rank
प्रदीप राजपुरोहित 13th Rank
निशांत जैन 13th Rank
गंगा सिंह 33rd Rank
प्रदीप कु. द्विवेदी 74th Rank
हिन्दी माध्यम में अब तक का सर्वश्रेष्ठ रैंक
रवि कु. सिहाग
अदित्य कु. झा
हरी शंकर
दिलखुश मीना
जगदीश बांगरवा
जगदीश कुमार
राहुल कु. सिंह
शीतल कुमारी
कमलेश मीना
भारत मनोज फतेसिंह
मिंटू लाल मीना
सचिन कुमार
सुनील कुमार
देवेंद्र प्रकाश मीना
ब्रज मोहन मीना
अनुप मीना
चेतराम मीना
सिद्धार्थ कु. मीना
विवेक कु. दोसाद
ज्योति शर्मा
अनिरुद्ध कुमार
अरविंद प्रताप सिंह
दिनेश कुमार यादव
अजय कुमार यादव
साक्षी गर्ग
राजीव कुमार चौधरी
बबीता रानी स्वैन
आदित्य कुमार झा
सोनल
प्रदीप कुमार द्विवेदी
आशुतोष शुक्ला
लाखन सिंह यादव
विकास मीणा
अनिल कुमार यादव
विजय सिंह गुर्जर
विकास सुंडा
मुकेश कुमार लुनायत
चेतन कुमार मीणा
हेमेंद्र कुमार मीणा
अक्षय कुमार टेमरावाल
कांता जांगिड
बिक्रम गंगवार
अशोक कुमार
अनिल कुमार वर्मा
रतन दीप गुप्ता
पंकज कुमार मीणा
पवन कुमार यादव
निलेश कुमार केशरी
आशीष कुमार
मनोज कुमार रावत
हिमांशु यादव
संदीप कुमार मीणा
भूपेंद्र रावत
शिव सिंह मीना
कमलेश मीना
गौरव कुमार सिंह
कृष्णकांत पाठक
बंदना प्रेयशी
श्वेता सिंघल
श्रीमन शुक्ला
तरुण राठी
सूफिया फारुकी
राज कमल यादव
नीलिमा
उदित प्रकाश
किंजल सिंह
शचीन्द्र प्रताप सिंह
कौशलेन्द्र विक्रम सिंह
मुक्तानंद अग्रवाल
बलदेव पुरुषार्थ
नीतू कुमारी प्रसाद
नथमल डिडेल
मुकेश कुमार
ब्रह्मदेव तिवारी
दयानिधान पांडेय
मनीष कुमार
राजेश प्रधान
आर्द्रा अग्रवाल
रमेश वर्मा
अश्विनी मुदगल
नरेंद्र मीणा
मिथिलेश मिश्रा
गोविंद जयसवाल
अभिषेक सिंह
राहुल रंजन महिवाल
धनंजय सिंह भदौरिया
गिरवर दयाल सिंह
काना राम
शिल्पा गर्ग
दीपक आनंद
रूबल गुप्ता
आशीष सिंह
संगीता तेतरवाल
डॉ. विक्रांत पांडेय
कृष्णा वाजपेयी
सीमा त्रिपाठी
अजीत वसंत
वैभव श्रीवास्तव
अवनीश कुमार शरण
अशोक मीणा
नितीश कुमार
अनूप कुमार सिंह
मनोज कुमार
प्रदीप कुमार
रानू साहू
अमित कुमार
गौरव गांधी
नीलम रानी
विवेक अग्रवाल
दीपि अग्रवाल
अजय कुमार
मनिता मलिक
ब्रजेश संत
अभिषेक सिंह
पुष्पेंद्र कुमार
प्रतिभा पारिक
श्रद्धा जोशी
दीपक वर्णवाल
सुधांशुधर मिश्र
मोहित अग्रवाल